अध्याय–10

वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र छिंदवाड़ा

वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र– एक सरसरी दृष्टि में

वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र, छिंदवाड़ा, 30 मार्च, 1995 को अस्तित्व में आया। इसे भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के तहत उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के सैटेलाइट केन्द्र के रूप में घोषित किया गया है। इस केन्द्र को जैवविविधता संरक्षण, अकाष्ठ वन उपज, वन रक्षण, सामाजिक–आर्थिक, वन संवर्धन और वृक्ष सुधार जैसे विशेषीकृत क्षेत्रों में वानिकी अनुसंधान करने का अधिदेश मिला है। इसके अतिरिक्त इस केन्द्र को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करके वानिकी सेक्टर में मानव संसाधन का विकास करने का कार्य भी सौंपा गया है ताकि स्व–रोजगार द्वारा निर्धनता में कमी लाई जा सके।

वर्ष 2001–2002 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

कोई नहीं

वर्ष 2001–2002 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1 : वन प्रबंध और पुनर्जनन पर विशेष जोर देने के साथ निम्नीकरण स्तर के अनुसार शुष्क पर्णपाती वन की संरचना और कार्य। (आई डी नं. 18)। प्रधान अन्वेषक– डॉ. पी.के. पाण्डे।

स्थिति : क्षेत्र और विश्लेषण का कार्य पूरा हो चुका है, अन्तिम रिपोर्ट संकलित की जा रही है।

परियोजना 2 : औषधीय और सुरभित पादपों की खेती तकनीकों का मानकीकरण (049/सी एफ आर एच आर डी – (2001–2002)/1(2)/2001–2006)। प्रधान अन्वेषक– डॉ. ए.के. पाण्डे।

स्थिति : 90 औषधीय और सुरभित पादप प्रजातियों के साथ एक शाकीय उद्यान एवं पौधशाला स्थापित की गई। रोपण पदार्थ का गुणन किया जा रहा है। विभिन्न औषधीय एवं पादप प्रजातियों के रोपण के लिए छिंदवाड़ा में प्रायोगिक स्थलों का चयन किया गया। प्रेक्षण अभिलिखित किए गए कि एन्ड्रोग्रेफिस पेनिकूलाटा (कलमेघ), रावोल्फिया सर्पेन्टाइना (सर्पगंधा) और कूर्कमा

पौधशाला में उगा अश्वगंधा

अंगूस्टिफोलिया (तिखुर) को बिक्सा ऑरीलेना, मेलाइना आर्बोरीया एवं एम्ब्लिका ऑफिसिनेलिस के साथ बीच की फसल के रूप में लगाया जा सकता है। पामारोजा, लेमन घास और थूजा ऑरिएन्टेलिस से संगध तेल निष्कर्षित किया गया और इनके रासायनिक अभिलक्षण के लिए विश्लेषण किया गया। अश्वगंधा, मुस्कदाना, कालमेघ, कालीहारी, सतावर, सर्पगंधा और लेमन घास के लिए खेती पैकेज विकसित किए गए। सफेद मूसली (क्लोरोफाइटम बॉरिविलिएनम) की खेती पर बुलेटिन निकाला गया।

परियोजना 3 : एम्ब्लिका ऑफिसिनेलिस और मेलाइना आर्बोरिया के नाशिकीटों पर अध्ययन (050/सी एफ आर एच आर डी–(2001–2002)/2(3)/2001–2006)। प्रधान अन्वेषक : डॉ. पी बी. मेशराम।

स्थिति : मेलाइना आर्बोरीया के विभिन्न आयु समूह के रोपणों की मर्त्यता तथा मृदा पोषकों ऊंचाई/घेरा श्रेणियों के साथ इनके संबंधों पर नाशीजीव प्रकोप के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया। अतिरिक्त परिदृश्य में वर्तमान समस्या का सामना करने के लिए संभावित उपाय शामिल किए गए। मुख्य नाशीजीव के विरूद्ध मेलाइना आर्बोरीया के 10 राष्ट्रीय उद्गम स्थलों की जांच की गई। कीट बीमारियों के कारण मेलाइना आर्बोरीया के सिंचित रोपण में शीर्ष शुष्कन समस्या देखी गई। रस चूषक टिंगिस बीसोनी इसके बाद कवक हीन्डरसोनूला प्रजाति के प्रभाव को मोनोक्रोटोफोज 36 ई.सी.@0.05%+0.02% कार्बन्डेसन 50 डब्ल्यू.पी. का छिड़काव करके नियंत्रित किया गया। गाल बनाने वाले कीट बीटोसा स्टाइलोफोरा के मौसमीय इतिहास का अध्ययन किया गया। अन्य किस्मों (एन 6, एन 7, फ्रान्सिस, बनारसी, वाइल्ड) की अपेक्षा ई. स्टाइलोफोरा, चकइया की सात किस्में इसके बाद कंचन नाशीजीव आक्रमण के प्रति कम संवेदी पाए गए।

परियोजना 4 : बुकानेनिया लेन्जन स्परेंग (एचार अथवा चिरौंजी) की पौधशाला तकनीकों और प्रवर्धन विधियों का मानकीकरण (.051/सी एफ आर एच आर डी–(2001–2002)/3(4)/(2001–2004)। प्रधान अन्वेषक– श्री जगदीश सिंह।

स्थिति : आई ए ए के साथ उपचार करके गैर–धूमिका प्रवर्धन कक्ष के तहत बुकानेनिया लेन्जन के दो साल के स्टॉक की जड़ कलमों में सफलतापूर्वक मूलोत्पत्ति लाई गई। पौधशाला तकनीकों को मानकीकृत करने के लिए, बीजों के अंकुरण एवं पौधों के प्रदर्शन पर बुआई, पलवार, स्थिति–निर्धारण और रोपण की गहराई के प्रभाव की जांच हेतु क्षेत्र में प्रयोग तैयार किया गया। 0.25 हैक्टेयर क्षेत्र में बुकानेनिया लेन्जन रोपण स्थापित किए गए ताकि विभिन्न विधियों, उदाहरण – जड़ कलम से उगाए गए पौधों, बीज से उगाए पौधों, एक साल के ठूंठ और दो साल के ठूंठ, द्वारा उगाए गए पौधों के प्रदर्शन की जांच और मानकीकरण किया जा सके।

वर्ष 2001–2002 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

कोई नहीं

विदेशों से सहायता–प्राप्त परियोजनाएं

परियोजना 1 : भारत के विभिन्न कृषि–पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में नीम का एकीकृत विकास (उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर से सी एफ आर एच आर डी, छिंदवाड़ा के लिए नियत घटक)।

स्थिति : तीन कृषि जलवायवीय क्षेत्रों, यथा– सतपुड़ा, नर्मदा और बाणगंगा कृषि जलवायवीय क्षेत्र, से 320 धन वृक्षों का चयन किया गया। बीज प्राप्त करके 50,000 पौधे उगाए गए। तीन कृषि–जलवायवीय क्षेत्रों के लिए ऋतुजैविकीय अध्ययन पूरे किए गए। विभिन्न कृषि जलवायवीय क्षेत्रों के चयनित धन वृक्षों से हार्मोनों से उपचारित करने के उपरांत कायिक प्रवर्धन, शाखा कलम द्वारा 2000 नीम पादप उगाए गए। पोएमा, सी एफ आर एच आर डी (म.प्र.) में 2.0 हैक्टेयर क्षेत्र और हेती (एम एस.) में 1.5 हैक्टेयर क्षेत्र में आठ उद्‌गमस्थल को मिलाकर उद्‌गमस्थल परीक्षण स्थापित किए गए। विभिन्न स्रोतों के बीजों से वसीय तेल निष्कर्षित किया गया। हिम परिरक्षण और एक्सेसन नं0 आबंटन के लिए बीजों को एन बी पी जी आर, नई दिल्ली भेजा गया।

शिक्षा और प्रशिक्षण

क्र.सं.	विषय	लक्ष्य समूह
1.	औषधीय एवं सुरभित पादपों की खेती	जी ई एफ के तहत 104 प्रशिक्षणार्थी –वी एफ सी/ई डी सी के सदस्य और म.प्र. के रा.व.वि. कर्मचारी
2	औषधीय पादपों की खेती, नाशीजीव प्रबंध, जैव उर्वरक, मृदा संरक्षण, कृषि वानिकी और कम्प्यूटर अनुप्रयोग	म.प्र., महाराष्ट्र एवं उड़ीसा के 300 प्रशिक्षणार्थी – किसान, वी एफ सी/ई डी सी के सदस्य,राज्य वन विभाग कार्मिक और सी एफ आर एच आर डी, छिंदवाड़ा के कर्मचारी कर्मचारी

प्रकाशन

पाण्डे, ए.के., और पात्रा, ए.के. (2001)। प्रोसीडिंग ऑफ दी नेशनल वर्कशॉप ऑन कन्जरवेशन एण्ड कॉमर्शियल कल्टिवेशन ऑफ मेडिसिनल एण्ड ऐरोमेटिक प्लांट्स, दिसम्बर, 26–27, 2001, सी एफ आर एच आर डी, छिंदवाड़ा।

प्रकाशित बुलेटिन

पाण्डे, ए.के., पात्रा और शुक्ला, पी.के.(2002), कल्टिवेशन ऑफ मेडिसिनल प्लांट्स : सफेद मूसली (क्लोरोफाइटम बॉरिविलिएनम), सी एफ आर एच आर डी बुले. नं. 8।

औषधीय एवं सुरभित पादपों की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रकाशित शोध लेख

1. चौधरी,ए.आर और पाण्डे, ए.के. (2001)। एरोमेटिक प्लांट्स इन हेल्थ केयर, औषधीय एवं सुरभित पादपों के संरक्षण एवं व्यापारिक खेती पर राष्ट्रीय कार्यशाला की कार्यवाहियां, वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र, छिंदवाड़ा।

2. जगदीश सिंह आदि (2001)। इफेक्ट ऑफ ग्रोथ हार्मोनस ऑन दी रूटिंग ऑफ रूट कटिंग्स ऑफ बुकानेनिया लेन्जेन स्परेंग। औषधीय एवं सुरभित पादपों के सरंक्षण एवं व्यापारिक खेती पर राष्ट्रीय कार्यशाला की कार्यवाही, दिसम्बर, 26–27, 2001, सी एफ आर एच आर डी., छिंदवाड़ा।

3. मेशराम आदि (2001)। इम्पैक्ट ऑफ पेस्ट प्रोब्लम इन मेलाइना आर्बोरीया लिन, प्लांटेशन्स इन वेस्ट महाराष्ट्र, इंडियन फारेस्टर, 127 (12) : 1377–76।

4. मेशराम पी.बी (2001)। एप्लिकेशन ऑफ सम सीस्टमिक इन्सेक्टिसाइड एगेन्स्ट दी वीविल मीकोबेरिस टर्मिनेली (कॉलीओप्टेरा : कूर्कूलिओनिडा), ए सीड बॉर्न ऑफ टर्मिनेलिया बेलिरिका। जॉ. ट्रापिकल फॉरेस्ट साइंस,13 (3):548–550।

5. पाण्डे, ए.के. और पात्रा, ए.के. (2001)। इन्फ्लूएन्स ऑफ प्रोपेगेसन मैथड्स ऑन रूट क्वालिटी एण्ड प्रोडक्टिविटी ऑफ अश्वगंधा (विथानिया सोम्निफेरा डूनल), छत्तीसगढ़ पर विशेष जोर देने के साथ शाकीय संरक्षण, खेती, विपणन और उपयोजन पर राष्ट्रीय अनुसंधान सेमिनार की कार्यवाही, ''दी हर्बल स्टेट'', दिसम्बर 13–14, 2001।

6. पाण्डे, ए.के. और शुक्ला, पी. के. (2002)। इफेक्ट ऑफ प्लान्टिग डेट्स एण्ड स्पेसिंग ऑन यील्ड ऑफ एबीलमॉस्कस मास्केटस मीडिक, अण्डर ट्रापिकल क्लाइमेटिक कन्डिशन्स, एफ ए एफ ए आई, जरनल, 4 (1) : 39:41।

सम्मेलन, बैठकें, कार्यशालाएं, संगोष्ठी, प्रदर्शनियां

- सी पी क्लब,नागपुर में सितम्बर, 2001 में महाराष्ट्र वन विभाग के प्रधान मुख्य वन संरक्षक और अन्य अधिकारियों के साथ महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.पं. की अध्यक्षता में सम्पर्क बैठक आयोजित की गई।

- फ्रीप के अन्तर्गत 26–27, दिसम्बर 2001 के दौरान 'औषधीय एवं सुरभित पादपों का संरक्षण एवं व्यापारिक खेती' पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें विभिन्न अनुसंधान संस्थानों/विश्वविद्यालयों/गैर–सरकारी संगठनों/राज्य वन विभागों/किसानों, युवाओं,पादप उत्पादकों आदि से 93 सहभागियों ने भाग लिया।